बी.काम प्रथम वर्ष

वित्तीय लेखांकन

खण्ड-I

अध्याय –1 लेखांकन का आशय, विकास, उद्देश्य एवं क्षेत्र.

लेखाकंन का आशय एवं परिभाषाऍं, लेखांकन की विशेषताऍं/प्रकृति, लेखाकंन का विकास, लेखाकंन की आवश्यकता एवं उद्देश्य,लेखाकंन के लाभ, लेखाकंन के दोष, लेखाकंन चक्र, लेखाकंन का क्षेत्र, लेखाकंन की शाखाऍं अथवा प्रकार, लेखाकंन एवं अन्य विषय, लेखाकंन में हित रखने वाले व्यक्ति अथवा लेखांकन सूचनाओं के उपयोगकर्ता, व्यवसायिक शब्द।

अध्याय–2 लेखांकन के सिध्दान्त

लेखांकन सिध्दान्तों का आशय,लेखांकन सिध्दान्तों की प्रकृति एवं विशेषताऍं, लेखांकन सिध्दान्तों का वर्गीकरण, लेखांकन सिध्दान्तों का महत्व, लेखांकन सिध्दान्तों की सीमाऍं,सामान्यताः स्वीकृत लेखाकंन सिध्दान्त।

अध्याय–3 लेखांकन मानक

लेखांकन मानकः आशय, अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन मानक, भारत में लेखांकन मानक।

अध्याय–4 रोजनामचा

लेखांकन समीकरण, डेबिट व क्रेडिट के नियम, द्विप्रविष्ट प्रणाली व इकहरी प्रविष्टि प्रणाली, खात, खातों का वर्गीकरण, खातों में डेबिट व क्रेडिट का महत्व, रोजनामचा का आशय एवं परिभाषाऍं, जर्नल का प्रारूप, जर्नल बनाने के चरण, जर्नल में लेखा के नियम, रोजनामचा के उद्देश्य, लाभ तथा सीमाएं।

अध्याय–5 खाताबही

खाताबही की आशय एवं परिभाएँ, खाताबही की उपयोगितॉ/लाभ, खाताबही का प्रारूप, खतौनी करने की प्रकिया या विधि खातों को बन्द करने तथा शेष निकालना ,रोजनामचा तथा खाताबही में अन्तर।

अध्याय–6 पूँजीगत एवं आयगत व्यय एवं प्राप्तियॉ

पूँजीगत व्यय का आशय, आयगत व्यय, आयगत व्यय का पूँजीगत बन जाना, पूँजीगत व्यय एवं आयगत व्यय कें अन्तर, आस्थगित आयगत व्यय, पूँजीगत प्राप्तियॉ एवं आयगत प्राप्तियॉ, पूँजीगत प्राप्ति एवं आयगत प्राप्ति एवं आयगत प्राप्ति के भेद, पूँजीगत भुगतान एवं आयगत भुगतान, व्ययों का पूँजीगत तथा आयगत में विभाजन, पूँजीगत लाभ एवं आयगत लाभ, पूँजीगत तथा आयगत हानियॉ।

अध्याय–7 तलपट

तलपट का आशय एवं परिभाषाएँ, तलपट के उद्देश्य, तलपट बनाने की विधियॉ।

अध्याय–8 अन्तिम खाते

अन्तिम खातों का आशाय, आय एवं व्यय को पूँजीगत तथा आयगत में विभाजन, वित्तीय विवरणों के आवश्यता तत्व, अन्तिम खातों का उद्देश्य व्यापार खाता, तथा विनिर्माण, खाता में भेद, लाभ–हानि खाता, व्यापार खातें तथा लाभ–हानि खातों में भेद, आर्थिक चिट्ठा (स्थिति विवरण, समूहीकरण तथा कमबध्दता, चिट्ठे तथा लाभ–हानि खातें में अन्तर, तलपट तथा आर्थिक चिट्ठा में भेद, सम्पत्तियॉ, दायित्व, अन्तिम खातें बनाते समय ध्यान रखने योग्य बातें, समायोजन।

अध्याय–9 अशुध्दियॉ एवं उनका संशोधन

तलपट को प्रभावित न करने वाली अशुध्दियॉ, तलपट को प्रभावित करने वाली अशुध्दियॉ, अशुध्दियों को पता लगाना, उचन्त खाता, एकपक्षीय अशुध्दियॉ, द्विपक्षीय अशुध्दियों का लाभ–हानि खाते पर प्रभाव ।

खण्ड–II

अध्याय–10 ह्रास लेखाकंन

ह्रास की विशेंषताएँ, ह्रास के उद्देश्य, ह्रास के कारण, ह्रास के मुख्य घटक, मूल्य ह्रास की विभिन्न विधियॉ ।

अध्याय–11 ह्रास लेखाकंन नीतियॉ

कम्पनी अधिनियम, 1956 में ह्रास सम्बन्धी प्रावधान, लेखांकन मानक 6(संशोधित)

अध्याय–12 प्रावधान एवं संचय

प्रावधान या विशेष संचय का आशय, आयोजन का विशेष संचय, संचय का आशय, प्रावधान तथा संचय में अन्तर, संचय के प्रकार।

अध्याय–13 गैर–व्यापारिक संस्थाओं का लेखाकंन

गैर–व्यापारिक संस्थाओं का आशय, प्राप्ति एवं भुगतान खाता रोकड़बही में अन्तर, आय–व्यय खाता, आय–व्यय खातें एवं लाभ–हानि खाते में अन्तर, प्राप्ति एवं भुगतान खातें व आय–व्यय खातें में अन्तर, गैर–व्यापारिक संस्थाओं की पुस्तकों की मुख्य मदें।

खण्ड –III

अध्याय–14 शाखा खाते

शाखा खातें तथा विभागीय खाते में तुलना, शाखाओं के प्रकार, आश्रित शाखाओं कें सम्बन्ध में लेखे, विदेशी शाखा के लेखे।

अध्याय–15 किराया कय पद्धति

किराया कय पध्दति का आशय एवं विशेषताएँ, किराया कय पध्दति की विशेषताएँ, किराया कय पध्दति के लाभ, किराया कय अनुबन्ध के सम्बन्ध में कानूनी प्रावधान, किराया कय अनुबन्ध का निरस्तीकरण, किराया कय तथा उधार कय मे तुलना ,

ब्याज की गणना विधि, किराय क्रय लेखाकंन, नगदी मूल्य एवं ब्याज की गणना करना, किश्तों के भूगतान में त्रुटि एवं वापसी, किराया क्रय व्यापार खाता, रहतिया एवं देनदार प्रणाली।

अध्याय–16 किस्त भुगतान पद्धति

किस्त भुगतान पद्धति का आशय, किस्त भुगतान पद्धति के लक्षण, किराया क्रय पद्धति तथा किस्त भुगतान पद्धति में तुलना, किस्त भुगतान पद्धति के लाभ, किस्त भुगतान पद्धति की हानियॉ।

खण्ड–IV

अध्याय–17 साझेदारी खातेः परिचय तथा अन्तिम खाते

साझेदारी के परिभाषा व लक्षण, साझेदारी संलेख, संलेख, साझेदारी लेखांकन व्यवहार का प्रभावित करने वाले नियम, स्थायी पूँजी खाते और चल पूँजी खाते में भेद, पूँजी खाते तथा चालू खाते में अन्तर, परिवर्तनशील पूँजी की दशा में साझेदारी के पूँजी खाते का नमूना, पूँजी स्थिर होन पर चालू खाते तथा पूँजी खाते का नमूना, पूँजी खाते पर ब्याज, आहरण खाता, साझेदारों के ऋण खाते, साझेदारो का पारिश्रमिक/वेतन, लाभ–हानि में भाग, जर्नल लेखे, आहरण पर ब्याज की गणना की विधि।

अध्याय–18 साझेदारी खातेः ख्याति एवं साझेदार का प्रवेश

नये साझेदार द्वारा पूँजी लाया जाना, नया लाभ–हानि विभाजन अनुपात निकालना, त्याग अनुपात निकालना, ख्याति, साझेदार के प्रवेश पर ख्याति का प्रयोग तथा लेखाकंन उपचार, लाभ–हानि समायोजन खाता, पूँजी का समायोजन, लाभ की गारण्टी।

अध्याय–19 साझेदारी खातेः साझेदार का अवकाश ग्रहण तथा मृत्यु

साझेदारी के अवकाश ग्रहण का आशय, अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार का देय कुल राशि, नया लाभ–हानि अनुपात निकालना, त्याग अनुपात तथा लाभ प्राप्ति अनुपात में अन्तर, अविभाजित लाभ एवं संचय, सम्पत्तियों एवं दायित्वों का

पुनर्मूल्यॉकन, ख्याति का मूल्यांकन, अवकाश ग्रहण–सह–प्रवेश, साझेदार की मृत्यु, संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी।

अध्याय–20 फर्म कस विघटन (I) : सामान्य

साझेदारी के विघटन का आशय, विघटन की विधियॉ, फर्म के विघटन पर खातें का निस्तारण, जर्नल लेखे, विघटन पर खाते, गैर–अभिलिखित सम्पत्ति एवं दायित्वों का लेखा, फर्म के ऋण तथा साझेदारों के निजी ऋण, लेनदारों को भुगतान का लेखांकन।

अध्याय–21 फर्म का विघटन (II) दिवालिया होना

गार्नर बनाम मर्रे का वाद, सभी साझेदारों का दिवालियापन, गार्नर बनाम मर्रे नियम के अन्तर्गत लेखे।

अध्याय–22 फर्म का विघटन (III) सम्पत्तियों की कमिक वसूली तथा भागशः विभाजन

भागशः बॅटवारे का आशय, भुगतान का कम, भागशः बॅटवारे की रीतियॉ।

व्यावसायिक गणित

खण्ड–I

अध्याय–1 अवकलन

फलन, अवकलन के प्रमुख नियम, द्वितीय कम का अवकलन, आंशिक अवकलन, समधातीय फलन, उच्चिष्ठ एवं निम्निष्ठ, उत्तल तथा अवकल वक, लघुगणक एवं उनके प्रयोग, प्रतिलघुगणक, लघुगणक में आधार परिवर्तन

खण्ड - II

अध्याय–02 आव्यूह तथा सार्रणक

परिभाषा, आव्यूहों का योग, आव्यूहों का घटाना, आव्यूहों का अदिश से गुणन, आव्यूहों की समता, आव्यूहों का गुणा, आव्यूहों का परिवर्त, सारणिक

खण्ड–III

अध्याय 03 रेखीय प्रकमन

रेखीय प्रकमन का अर्थ एवं परिभाषा, रेखीय प्रकमन के लाभ, अनुपात की अवधारणा एवं अर्थ, अनुपात के प्रकार, साझेदारी में अनुपात, लाभ प्राप्ति अनुपात

खण्ड–IV

अध्याय 04 चकवृध्दि ब्याज तथा वार्षिकी

चकवृध्दि ब्याज का अर्थ, चकवृध्दि ब्याज की गणना जबकि समय अवधियों की संख्या पूर्ण संख्या में ना हो, विभिन्न ब्याज दरों की दशा में चकवृध्दि ब्याज की गणना वार्षिकी, शोधन निधि, ब्याज का सतत संयोजन

अध्याय 05 औसत

परिभाषा, औसत से सम्बन्धित सूत्र, भारित औसत तथा सामूहिक औसत, प्रतिशतता, प्रतिशतता संबंधी नियम, कमीशन एवं दलाली, लाभ एवं हानि, विभिन्न सूत्र

व्यावसायिक संचार एवं सम्प्रेषण

खण्ड–I

अध्याय 01 व्यावसायिक संचार (सम्प्रेषण) : आशय व महत्व

संचार का आशय, संचार की परिभाषाएँ, संचार के तत्व, संचार की प्रकृति, व्यावसायिक संचार के उद्देश्य, संचार का क्षेत्र, व्यावसायिक संचार के महत्व में वृध्दि के कारण, प्रबन्धकों के लिए संचार का महत्व

अध्याय 02 संचार के मूलरूप

आन्तरिक संचार, बाह्य संचार, संचार का वर्गीकरण, संचार की दिशा, बहु–दिशा सम्प्रेषण, अन्तरवैयक्तिक संचार, लिखित संचार, अमौखिक संचार, संचार के साधन, संचार के लिखित साधन, संचार की दृश्य तकनीकें, संचार माध्यम की पंसद

अध्याय 03 संचार की प्रकिया, सिध्दान्त एवं प्रतिरूप

संचार प्रकिया का आशय, संचार प्रकिया के संघटक, प्रतिपुष्टि के तरीके, प्रतिपुष्टि की प्रकिया, प्रतिपुष्टि का महत्व , प्रभावी प्रतिपुष्टि कौशल को विकसित करने हेतु सुझााव, संचार तथा अन्य विषय, प्रभावी तथा अन्य विषय, संचार के भारतीय प्रतिरूप, संचार के सिध्दान्त

अध्याय 04 संचार सम्बंधी विचारधाराएँ

संचार की सूचना विचारधारा, अन्तकिया विचार धारा, सव्यवहार विचारधारा, महत्व

अध्याय 05 श्रोता विश्लेषण

श्रोता, विश्लेषण का आशय, प्रकिया

अध्याय 06 स्व–विकास एवं संचार

स्व–विकास का आशय, स्व–विकास करना, प्रभावी सम्प्रेषण का योगदान, उद्देश्य

अध्याय 07 औपचारिक तथा अनौपचारिक संचार

अनौपचारिक संचार, औपचारिक संचार के माध्यम

अध्याय 08 संचार की बाधाएँ

विभिन्न प्रकारों की बाधाएँ, संचार की बाधाएँ, संचार में बाधाओं के दुष्प्रभाव, बाधाओं के दूर करने हेतु सुझाव

अध्याय 09 व्यावसायिक संचार में व्यवहार

भाषण, व्याख्यान की तकनीकें, कुछ व्यावहारिक दिशा निर्देश, सामूहिक विचार–विमर्श, समूह का आशय, समूह के प्रकार, समूह के लक्षण, समूह की आवश्यकता एवं महत्व, विचार–विमर्श, सामूहिक विचार–विमर्श के उद्देश्य, सामूहिक विचार–विमर्श की दशाएँ/शर्तें, गुण/लाभ, दोष/हानियाँ, सेमीनार, सेमीनार की विशेषता, सेमिनार के आयोजन की प्रकिया, सम्मेलन, सम्मेलन का आयोजन

खण्ड–III

अध्याय 10 लेखन कौशल या दक्षता

लेखन दक्षता का आशय, लेखन कुशलता के चरण, प्रभावशाली लेखन के लिए आवश्यक बातें

अध्याय 11 व्यापारिक पत्र(I)

व्यापारिक पत्र के कार्य, व्यापारिक पत्र के उद्देश्य, प्रभाव व्यापारिक पत्र के तत्व, व्यापारिक पत्र की प्रभावशीलता के संघटक, व्यापारिक पत्र के भाग या अंश, व्यापारिक पत्र का प्रारूप (ढ़ाँचा), व्यापारिक पत्रों के प्रकार

अध्याय 12 व्यापारिक पत्र (II)

पूछताछ के पत्र, ओदश पत्र, व्यापारिक संदर्भ एवं हैसियत पूछताछ करने वाले अथवा साख एवं प्रस्थिति जानने हेतु पत्र, शिकायती पत्र, वसूली पत्र, विकय पत्र

अध्याय 13 प्रतिवेदन लेखन

प्रतिवेदन से आशय, प्रतिवेदन के लक्षण, प्रतिवेदनों के प्रकार, कार्य के आधार पर, विषय–सामग्री, व्यावसायिक रिपोर्ट तैयार करने के चरण

अध्याय 14 प्रस्तुतीकरण

परिचय, व्यक्तिगत प्रस्तुतीकरण, समूह प्रस्तुतीकरण, प्रस्तुतीकरण, प्रस्तुतीकरण के भेद, प्रभावी प्रस्तुतीकरण, प्रस्तुतीकरण हेतु तैयारी, प्रस्तुतीकरण क्यों?

खण्ड–IV

अध्याय 15 अशाब्दिक संचार

सांकेतिक संचार के लक्षण, सांकेतिक संचार का महत्व, सांकेतिक संचार के कार्य, सांकेतिक संचार के संघटक या तत्व, मौखिक एवं सांकेतिक संचार, सांकेतिक एवं मौखिक संचार मे भेंद, सीमाएँ

अध्याय 16 प्रभावी श्रवणता

श्रवणता का आशय, श्रवणता के प्रकार, श्रवणता की महत्ता, श्रवणता के उद्देश्य, अच्छे श्रोता के लक्षण, प्रभावी श्रवणता की मुख्य बातें, प्रभावशाली श्रवणता के मुख्य सिध्दान्त, श्रवणता में आनें वाली बाधाएँ, प्रभावी श्रवणता हेतु सुझााव, प्रभावपूर्ण लिखित श्रवणता, प्रभावी मौखिक श्रवणता, प्रभावपूर्ण दृश्य श्रवणता

अध्याय 17 साक्षात्कार दक्षता एवं नौकरी हेतु आवेदन

महत्व, उद्देश्य, साक्षात्कार के लाभ, साक्षात्कार के प्रकार, साक्षात्कार की तैयारी, साक्षात्कार की सफलता हेतु सुझाव, आत्म–सार, विषय–सामग्री, प्रभावशाली आत्म–सार कैसे लिखा जाता है?, आवेदन –पत्र का आशय आवेदन –पत्र के तत्व, प्राध्यापक पद हेतु आवेदन का नमूना

अध्याय 18 संचार के आधुनिक रूप

ई–मेल, वीडियों कान्फ्रेन्सिंग, फैक्स, इण्टरनेट

अध्याय 19 अन्तर्राष्ट्रीय संचार

ई–कॉमर्स, कार्य–प्रणाली या अनुपयोग, भूगतान प्रणाली, ई–कामर्स के लाभ, खतरे तथा सुरक्षा

व्यावसायिक नियमन एवं रूपरेखा

खण्ड–I

अध्याय 01 अनुबन्धः आशय, प्रकृति तथा वर्गीकरण

आधारभूत परिभाषाएँ , अनुबन्धः आशय एवं परिभाषा, बैध अनबुन्ध के आवश्यक लक्षण, ठहराव, ठहराव तथा अनुबन्ध, ठहराव का महत्व, अनुबन्ध तथा ठहराव में अन्तर, अनुबन्ध के प्रकार या वर्गीकरण।

अध्याय 02 प्रस्ताव तथा स्वीकृति

प्रस्ताव का आशय एवं परिभाषा, प्रस्ताव के तत्व या विशेषताएँ, प्रस्ताव कब तक प्रभावशील रहता है?, प्रस्ताव का वर्गीकरण, प्रस्ताव सम्बन्धी वैद्यानिक नियक, स्वीकृति का आशय एवं परिभाषा , स्वीकृति का प्रभाव, विशिष्ट तथा सामान प्रस्ताव की दशा में स्वीकृति कौन दे सकता है ?, स्वीकृति के सम्बन्ध में नियम, प्रस्ताव एवं स्वीकृति का संवहन, प्रस्ताव का संवहन, प्रस्ताव का खण्डन, स्वीकृति का खण्डन।

अध्याय 03 पक्षकारों की अनुबन्ध करने की क्षमता

अनुबन्ध करने की क्षमता का आशय, अनुबन्ध करनें के योग्य व्यक्ति।

अध्याय 04 स्वतन्त्र सहमति

सहमति की परिभाषा, सहमति के लक्षण, स्वतन्त्र सहमति का आशय, उत्पीड़न, अनुचित प्रभाव, उत्पीड़न एवं अनुचित प्रभाव में अन्तर, कपट, मिथ्या वर्णन, कपट एवं मिथ्या वर्णन में अन्तर, सहमति स्वतन्त्र न होनें के प्रभाव।

अध्याय 05 न्यायोचित प्रतिफल एवं उद्देश्य

प्रतिफल की परिभाषा, प्रतिफल के आवश्यक तथ्य या आवश्यक लक्षण, अवैधानिक प्रतिफल तथा उद्देश्य, प्रतिफल एवं उद्देश्य का आंशिक रूप से व्यर्थ होना, प्रतिफल रहित ठहराव, प्रतिफल के सम्बन्ध में भारतीय तथा अंग्रेजी कानून में अन्तर।

अध्याय 06 स्पष्ट रूप से व्यर्थ घोषित ठहराव

अध्ययन के उद्देश्य, परिचय, व्यर्थ घोषित ठहराव ।

अध्याय 07 अनुबन्धों का निष्पादन

अनुबन्ध के निष्पादन का आशय, किसके द्वारा अनुबन्ध पूरा किया जा सकता है, उत्तराधिकार तथा अधिन्यास में भेद, निष्पादन के प्रस्ताव को स्वीकार करने में मना करने का प्रभाव, वचन पूरा करने वाले पक्षकार द्वारा मना करने के प्रभाव, संयुक्त वचनदाताओं का दायित्व, संयुक्त वचनगृहीताओं के अधिकार, वचन के पूर्ण करने हेतु समय एवं स्थान, व्युत्क्रम वचनों का निष्पादन, जहॉ समय तत्व अनिवार्य हो वहॉ समझौता में नियत पर अनुबन्ध करने में मूल का प्रभाव, निष्पादन की असम्भाविता, भूगतान का नियोजन, अनुबन्ध जिन्हे पूरा करने की आवश्यकता नहीं होती ।

अध्याय 08 अनुबन्धों की समाप्ति

अनुबन्ध समाप्ति का अर्थ, अनुबन्ध समाप्ति के तरीके।

अध्याय 09 अनुबन्ध भंग के उपचार

अनुबन्ध भंग का आशय, अनुबन्ध भंग की दशा में पीड़ित पक्षकार को प्राप्त उपचार।

अध्याय 10 हानिरक्षा(क्षतिपूर्ति) एवं प्रत्याभूति के अनुबन्ध

हानिरक्षा अनुबन्ध का आशय, हानिरक्षा अनुबन्ध के मुख्य तत्व, हानिरक्षाधारी के अधिकार, हानिरक्षक के अधिकार, प्रत्याभूति के अनुबन्ध, हानिरक्षा तथा प्रत्याभूति अनुबन्ध में अन्तर, हानिरक्षा तथा प्रत्याभूति अनुबन्ध में भेद, प्रतिभू का प्रत्याभूति अनुबन्ध में अन्तर, हानिरक्षा तथा प्रत्याभूति अनुबन्ध में भेद, प्रतिभू का प्रत्याभूति दायित्व, प्रतिभू का प्रत्याभूति दायित्व का समाप्त होना, प्रतिभू का प्रत्याभूति दायित्व अधिकार, अवैध प्रत्याभूति अनुबन्ध।

अध्याय 11 निक्षेप तथा गिरवी के अनुबन्ध

निक्षेपः आशय एवं परिभाषा, लक्षण, प्रकार या वर्गीकरण, निक्षेपी के क्या कर्तव्य हैं?, निक्षेपी के क्या अधिकार होते है ? निक्षेप ग्रहीता के क्या अधिकार होते हैं? निक्षेप ग्रहीता के क्या कर्तव्य हैं? निक्षेप का अन्तर ग्रहणाधिकार, विशिष्ट ग्रहणाधिकार एवं सामान्य ग्रहणाधिकार में अन्तर, खोये हुई वस्तु का प्रापक, गिरवी , गिरवी की विशेषताएँ, गिरवी रखने वाले के कर्तव्य, गिरवी रखने वाले के अधिकार, गिरवी रख लेने वाले के कर्तव्य, गिरवी रख लेने वाले के अधिकार, माल के स्वामियों के अलावा अन्य व्यक्तियों द्वारा गिरवी।

खण्ड–II

अध्याय 12 एजेन्सी के अनुबन्ध

एजेन्सी : परिभाषा, एजेन्ट का नियुक्त किया जाना, एजेन्ट का आशय एवं कौन हो सकता है, एजेन्सी के मुख्य तत्व, एजेन्ट के प्रधान के प्रति कर्त्तव्य, एजेन्ट के अधिकार, एजेन्सी का निर्माण, एजेन्टों के प्रकार, उप–एजेन्ट स्थापनापन्न एजेन्ट, स्थापनापन्न एजेन्ट एवं उप–एजेन्ट में अन्तर, तृतीय पक्षकारों के प्रति प्रधान के दायित्व एजेन्ट का व्यक्तिगत दायित्व, अप्रकट प्रधान, एजेन्सी की समाप्ति, खण्डनीय एजेन्सी, एजेन्सी के खण्डन सम्बन्धी कतिपय अन्य नियम, कुटिल (बनावटी) एजेन्ट।

अध्याय 13 वस्तु विकय अधिनियम,1930 : वस्तु विकय अनुबन्ध, माल एवं मूल्य

माल विकय अनुबन्ध : अर्थ, लक्षण, औपचारिक्ताएँ, विकय तथा विकय का ठहरावः अन्तर, निक्षेप व विकय में अन्तर, किराया कय ठहराव व विकय में अन्तर, गिरवी तथा विकय में अन्तर, माल विकय अनुबन्ध कम विषय–वस्तु अर्थात् माल, माल का वर्गीकरण, विषय वस्तु का नष्ट हो जाना, मूल्य का आशय, मूल्य निर्धारण की विधियॉ।

अध्याय 14 शर्तो एवं अश्वासन

शर्त, आश्वासन, शर्त व आवश्वासन में अन्तर, शर्त भंग को आश्वासन भंग माना जाना , गर्भित शर्ते एवं आश्वासन, गर्भित शर्ते, गर्भित आवश्वासन, शर्ते को आश्वासन के रूप में समझाा जाना, केता की सावधानी का नियम, केता की सावधानी के नियम के अपवाद।

अध्याय 15 माल में स्वामित्व का हस्तान्तरण

स्वामित्व का आशय, स्वामित्व हस्तान्तरण का महत्व, स्वामित्व के हस्तान्तरण सम्बन्ध नियम।

अध्याय 16 विकय अनुबन्ध का निष्पादन

विकेता के कर्तव्य, विकेता के अधिकार, केता के कर्तव्य, केता के अधिकार, सुपुर्दगी, सुपुर्दगी के प्रकार, सुपुर्दगी से सम्बन्धित प्रावधान।

अध्याय 17 अदत्त विकेता एवं उसके अधिकार तथा नीलाम द्वारा विकय

अदत्त विकेता : परिभाषा व विशेषताएँ, अदत्त विकेता के अधिकार, ग्रहणाधिकार तथा माल को मार्ग में रोकने के अधिकार में अन्तर, नीलामी द्वारा विकय।

अध्याय 18 किराया – कय ठहराव

किराया–कय ठहरावः आशय, किराय–कय ठहराव की विशेषताएँ, किराय–कय ठहराव की शर्तें, किराया–कय ठहराव व बिकी में अन्तर।

खण्ड–III

अध्याय 19 विनिमय – साध्य विलेख : प्रतिज्ञापत्र, विनिमय विपत्र व चैक तथा धारक एवं यथाविधिधारक

विनिमय साध्य विलेख अधिनियम, 1881 का परिचय, विनिमय साध्य विलेख की परिभाषाएँ व लक्षण, विनिमय साध्य विलेखों की कानूनी मान्यताएँ, विनिमय साध्य विलेख के प्रकार, प्रतिज्ञा पत्र, विनिमय विपत्र, चैक, चैक तथा विनिमय विपत्र में अन्तर, विनिमय साध्य विलेख के धारक, यथाविधिधारी, यथाविधिधारी के विशेष अधिकार, धारक तथा यथाविधिधारी में अन्तर।

अध्याय 20 चैक का रेखांकन

चैक के रेखांकन का आशय, चैक के रेखांकन के प्रकार, चैक और बैंकर के अधिकार एवं दायित्व।

अध्याय 21 विनिमय–साध्य विलेख का परकामण, अप्रतिष्ठा तथा विमुक्ति

परकामण की परिभाषा, परकामण के तरीके, परकामणकर्ता कौन हो सकता है?, दायित्व से विमुक्ति, अप्रतिष्ठा होने की सूचना, अप्रतिष्ठा होने की विधि।

खण्ड – IV

अध्याय 22 उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 के उद्देश्य उपभोक्ता संरक्षण क्या है?, उपभोक्ता के अधिकार उपभोक्ता संरक्षण परिषदें, अधिनियम के अन्तर्गत शिकायत निवारण संस्था, उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के मुख्य लक्षण।

अध्याय 23 विदेशी विनिमय प्रबन्धन अधिनियम, 2000: परिभाषाएँ एवं प्रमुख प्रावधान

अधिनियम के उद्देश्य, महत्वपूर्ण परिभाषाएँ, विदेशी विनिमय का नियमन तथा प्रबन्ध, अधिकृत व्यक्ति उल्लघंन तथा शक्तियॉं, न्याय निर्णय तथा अपील।

अध्याय 24 सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005

महत्व, नाम, विस्तार एवं आरम्भ, महत्वपूर्ण परिभाषाएँ, सूचना का अधिकार एवं सार्वजनिक प्राधिकारियों की बाध्यताएँ, सूचना का अधिकार, सार्वजनिक प्राधिकारियों की बाध्यताएँ, सार्वजनिक सूचना अधिकारियों का पदनाम, सूचना पाने का अनुरोध, राज्य सूचना आयोग, सूचना आयोगों के अधिकार व कार्य, दण्ड।

व्यावसायिक अर्थशास्त्र

खण्ड–I

अध्याय 01 व्यावसायिक अर्थशास्त्र का परिचय

अर्थशास्त्र का उद्‌भव एवं ऐतिहासिक परिचय, अर्थशास्त्र की परिभाषा, सम्बन्धी समस्याएँ, अर्थशास्त्र की परिभाषाएँ, धन सम्बन्धी परिभाषाएँ, कल्याण सम्बन्धी परिभाषाएँ, 'दुर्लभता' सम्बन्धी परिभाषाएँ/सीमितता सम्बन्धी परिभाषाएँ, इच्छाओं के लोप सम्बन्धी परिभाषाएँ/आवश्यकता–विहीनता, सम्बन्धी परिभाषाएँ, विकास सम्बन्धी परिभाषाएँ/आधुनिक परिभाषाएँ, अर्थशास्त्र की कुछ अन्य परिभाषाएँ व्यावसायिक अर्थशास्त्र का आशय, व्यावसायिक अर्थशास्त्र का स्वभाव तथा क्षेत्र, व्यावसायिक अर्थशास्त्र का महत्व, परम्परागत अर्थशास्त्र तथा व्यावसायिक अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र की विषय–सामग्री या क्षेत्र, अर्थशास्त्र का स्वभाव, अर्थशास्त्र का महत्व।

अध्याय 02 अर्थव्यवस्था की आधारभूत समस्याएँ

अर्थव्यवस्था के विभिन्न कार्य, आर्थिक समस्या का आशय, आर्थिक प्रणाली, आशय एवं प्रकार, अर्थशास्त्र की प्रमुख समस्याएँ।

अध्याय 03 कीमत यान्त्रिकी की कियाशीलता

कीमत यन्त्र का आशय, कीमत यान्त्रिकी की भूमिका, पूँजीवादी मिश्रित अर्थव्यवस्था में कीमत प्रणाली, समाजवादी अर्थव्यवस्था, में कीमत प्रणाली, कीमत प्रणाली के प्रतिबन्ध।

अध्याय 04 मॉग की लोच

मांग का आशय एवं परिभाषाएँ मॉग के भेद, मांग के अन्य प्रकार, मांग को प्रभावित करने वाले कारक, मॉग का नियम, मॉग में विस्तार एवं संकुचन, मॉग में वृध्दि या कमी, मांग में कमी तथा मॉग के संकुचन में भेद, मांग की वृध्दि तथा मांग के विस्तार में भेद, मांग लोच, परिभाषा, मॉग की लोच प्रकार या श्रेणियां, मांग की लोच के मापन की रीतियॉ, मॉग की लोच पर प्रभाव डालने वाले तत्व,

मांग की लोच का महत्व, विज्ञापन तथा मांग की लोच, मॉग की विज्ञापन लोच पर प्रभाव डालने वाले घटक ।

अध्याय 05 उत्पादन फलन

अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक उत्पादन फलन, रेखीय समरूप फलन, कॉब–डगलस का उत्पादन फलन, परिवर्तनशील अनुपात का नियम, उत्पत्ति ह्रास नियम की कियाशीलता।

अध्याय 06 ऋजु रेखाएँ, विस्तार पथ तथा पैमाने के प्रतिफल

विस्तार पथ, ऋजु रेखाएं अथवा उत्पादन के आर्थिक क्षेत्र की सीमाएं, पैमाने के प्रतिफल का आशय, पैमाने के प्रतिफल के निर्धारण घटक।

अध्याय 07 आन्तरिक एवं बाह्य बचतें

बड़े पैमाने का उत्पादन, बड़े पैमाने के उत्पादन के लाभ अर्थात् आन्तरिक व बाह्य बचतें, बड़े पैमाने के उत्पादन की वॉछनीयताएँ, छोटे पैमाने के उत्पादन, छोटे पैमाने के उद्योगों के विकासार्थ सुझाव, आर्थिक विकास में छोटे पैमाने के उद्योग की भूमिका ।

खण्ड–II

अध्याय 08 लागत सम्बन्धी सिध्दान्त

उत्पादन लागत के प्रकार, दीर्घकालीन लागतें, दीर्घकालीन औसत लागत वक के लक्षण, दीर्घकालिक सीमान्त लागत तथा दीर्घकालिक औसत लागत में सम्बन्ध, सारांश।

खण्ड-III

अध्याय 09 बाजार संरचना एवं व्यावसायिक निर्णय

बाजार का आशय एवं परिभाषाएँ, बाजार की विशेषताएँ, बाजार का वर्गीकरण, बाजार के विस्तार के कारण, पूर्ण प्रतियोगिता, विशुध्द प्रतियोगिता, पूर्ण या विशुध्द प्रतियोगिता का औचित्य, विशुध्द एकाधिकार, अपूर्ण प्रतियोगिता,

एकाधिकार प्रतियोगिता, अल्पाधिकार, द्वयाधिकार, पूर्ण प्रतियोगिता एवं अपूर्ण प्रतियोगिता में अन्तर।

अध्याय 10 व्यावसायिक फर्म के उद्देश्य

लाभ अधिकतमीकरण, सम्पदा क अधिकतमीकरण, मुख्य उद्देश्य।

अध्याय 11 पूर्ण प्रतियोगिता

मूल्य निर्धारण का सामान्य सिध्दान्त,प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों का विचार, आधुनिक अर्थशास्त्रियों का विचार मूल्य निर्धारण का विरोधाभास।

अध्याय 12 एकाधिकार

एकाधिकार–आशय व परिभाषा, वर्गीकरण, एकाधिकारी– शक्ति, एकाधिकारी–शक्ति के प्रकार, एकाधिकार के कारण, मूल्य निर्धारण के सम्बन्ध में मान्यताएँ, एकाधिकारी का उद्देश्य,क्या एकाधिकारी 'कीमत' तथा 'उत्पादन' दोनों को एक साथ निश्चित कर सकते है ?, एकाधिकार के अन्तर्गत मूल्य निर्धारण अल्पकाल में एकाधिकारी साम्य, दीर्घकाल में एकाधिकारी का साम्य, क्या एकाधिकार मूल्य तथा स्पर्धात्मक कीमत से ऊँची होती है?, प्रतियोगिता के भय में एकाधिकार मूल्य, एकाधिकार शक्ति को सीमित करने वाले कारक, एकाधिकार का नियत्रंण।

अध्याय 13 एकाधिकृत प्रतियोगिता

एकाधिकृत प्रतियोगिता की दशाएँ व लक्षण, अपूर्ण प्रतियोगिता और एकाधिकृत प्रतियोगिता को समानार्थी मानना, एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता में मूल्य निर्धारण, मूल्य निर्धारण की विधियॉ, पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत आगम एवं लागत वक, समूह साम्य, एकाधिकार एवं एकाधिकृत प्रतियोगिता में अन्तर।

अध्याय 14 अल्पाधिकार

अल्पाधिकार का अर्थ, विशेषताएँ, अल्पाधिकार के अन्तर्गत मूल्य निर्धारण, एकाधिकार एवं अल्पाधिकार में अन्तर, मोड़युक्त मांग वक, अल्पाधिकार का वर्गीकरण, मूल्य दृढ़ता।

खण्ड–IV

अध्याय 15 साधन कीमत निर्धारण

उत्पादन साधनों के मूल्य निर्धारण के सिध्दान्त, सीमान्त उत्पादकता सिध्दान्त।

अध्याय 16 मजदूरीः अवधारणा एवं सिध्दान्त

श्रम का आशय एवं परिभाषा, श्रम की विशेषताएँ, श्रम का वर्गीकरण या प्रकार, महत्व, श्रम तथा भूमि में अन्तर, मजदुरी का आशय, मजदूरी निर्धारण के सिध्दान्त।

अध्याय 17 लगान : अवधारणा एवं सिध्दान्त

लगानः अर्थ एवं परिभाषा, लगान के स्वरूप, आर्थिक लगान तथा ठेका लगान, लगान के सिध्दान्त, रिकार्डो के लगान सिध्दान्त तथा आधुनिक सिध्दान्त लगान में अन्तर, लगान तथा कीमत, आभास लगान, आभास लगान तथा लागत में समानताएँ।

अध्याय 18 ब्याज : अवधारणा एवं सिध्दान्त

ब्याजः अर्थ एवं परिभाषा, कुल ब्याज के संघटक, ब्याज के विभिन्न सिध्दान्त, क्या ब्याज की दर शून्य हो सकती है।

अध्याय 19 लाभः प्रकृति, अवधारणा एवं सिध्दान्त

लाभः अर्थ व परिभाषाएँ, कुल लाभ व शुध्द लाभ,कुल लाभ के संघटक, लाभ के विभिन्न सिध्दान्त।

व्यावसायिक पर्यावरण

खण्ड–I

अध्याय 01 भारतीय व्यावसायिक पर्यावरण अवधारणा, संघटक एवं महत्व

व्यावसायिक पर्यावरणः आशय एवं परिभाषाएँ, व्यावसायिक पर्यावरण के मुख्य लक्षण/प्रति, व्यावसायिक पर्यावरण का महत्व, व्यवसाय के आधार, व्यावसायिक पर्यावरण के संघटक, आर्थिक एवं अनार्थिक वातावरण में सम्बन्ध, भारतीय व्यावसायिक पर्यावरण, भारतीय प्रबन्धकों के समक्ष चुनौतियॉ, चुनौतियों का सामना करना, व्यावसायिक पर्यावरण की चुनौतियॉ तथा भारतीय अर्थव्यवस्था

अध्याय 02 भारत में राष्ट्रीय आय

राष्ट्रीय आय का आशय एवं परिभाषाएँ, राष्ट्रीय आय का महत्व, राष्ट्रीय आय की धारणाएँ, भारत में राष्ट्रीय आय के मापन की विधियॉ, भारत में राष्ट्रीय आय की गणना, भारत में राष्ट्रीय आय की गणना में कठिनाइयॉ, भारत में राष्ट्रीय आय की गणना में सुधार हेतु सुझाव, भारत में राष्ट्रीय आय की धीमी वृध्दि के कारण, भारत में राष्ट्रीय आय बढ़ाने हेतु सुझाव

अध्याय 03 बचत तथा विनियोग

बचत का आशय, बचत की दर, भारत में बचत की प्रवृत्तियॉ, भारत में बचत के स्त्रोत, बचतों के निर्धारण तत्व, बचत दर निम्न होनें के कारण, बचत में वृध्दि के लिए सुझाव, विनियोग(पूँजी निर्माण), बचत का विनियोग, पुँजी निर्माण के घटक, भारत में विनियोग की प्रवत्तियॉ अथवा भारत में पूँजी निर्माण, भारत में पूँजी निर्माण कम होने के कारण, भारत में पूँजी निर्माण के प्रोत्साहन हेतु सुझाव

अध्याय 04 भारतीय उद्योग : सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र

सार्वजनिक क्षेत्र, सार्वजनिक क्षेत्र की विशेषताएँ, सार्वजनिक उपकमों की आवश्यकता, सार्वजनिक उपकमों का औचित्य, भारत में सार्वजनिक क्षेत्र का विकास, सार्वजनिक क्षेत्र की उपाधियॉ अथवा निष्पादकता, सार्वजनिक क्षेत्र की न्यून निष्पादकता के कारण, सार्वजनिक उपकमों मे विनिवेश, सार्वजनिक उपकमों में विनिवेश का औचित्य, विनिवेश आयोग, निजी क्षेत्र आशय एवं विशेषताएँ, निजी

क्षेत्र का महत्व, निजी क्षेत्र का महत्व, भारत में निजी क्षेत्र की सरंचना, निजी क्षेत्र की उपलब्धियां, निजी क्षेत्र के दोष, निजी क्षेत्र के सुधार हेतु सरकारी प्रयास, निजी क्षेत्र को प्रभावी बनाने के सुझाव, सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों के मध्य समन्वय, सार्वजनिक क्षेत्र तथा निजी क्षेत्र में अन्तर

अध्याय 05 भारत में विदेशी व्यापार

भारत के विदेशी प्यापार की सरंचना, भारत के विदेशी व्यापार की मात्रा, भारत के विदेशी व्यापार की दशा, भारत के विदेशी व्यापार की नवीनतम प्रवृत्तियॉ,

अध्याय 06 भूगतान सन्तुलन

आशय एवं परिभाषाऍ, विशेषताऍ, भूगतान सन्तुलन की मदें, भुगतान सन्तुलन का महत्व, भुगतान सन्तुलन में असंतुलन, भुगतान सन्तुलन कर असाम्यता के कारण, भुगतान सन्तुलन के समाधान हेतु उठाए गए कदम भुगतान, सन्तुलन की असाम्यता को दूर करने हेतु सुझाव, भारत के भुगतान सन्तुलन की स्थिति

अध्याय 07 भारत में मुद्रा

मुद्रा का आशय एवं परिभाषाऍ, मुद्रा की मॉग, मुद्रा की मॉग को प्रभावित करने वाले तत्व, मुद्रा की पूर्ति, मुद्रा की पूर्ति की बहिष्कृत मदें, मुद्रा की पूर्ति के स्कन्ध तथा प्रवाह में अन्तर, मुद्रा पूर्ति के मापक, मुद्रा पूर्ति के निर्धारक तत्व, उच्च–शक्ति मुद्रा

अध्याय 08 भारत में वित्त

वित्त का आशय, भारतीय वित्तीय प्रणाली की सरंचना, विनियामक संस्थाऍ, वित्तीय बाजार

अध्याय 09 भारत में कीमतें

कीमत प्रवृत्तियॉः आयोजन काल में, मूल्य वृध्दि के कारण, कीमतों में वृध्दि के प्रभाव, सरकार ,द्वारा कीमत नियंत्रण की दिशा में किए गए प्रयास, मुतम वृध्दि रोकने हेतु सुझाव

खण्ड–II

अध्याय 10 आर्थिक संवृध्दि की विभिन्न समस्याएँ

आर्थिक संवृध्दि, आर्थिक विकास तथा आर्थिक प्रगति, आर्थिक विकास तथा आर्थिक विकास संवृध्दि में भेद, आर्थिक विकास के अभिसूचक, भारत में आर्थिक विकास की समस्याएँ

अध्याय 11 भारत में बेरोजगारी

बेरोजगारी का आशय, बेरोजगारी के प्रकार, भारत में बेरोजगारी की सीमा (1993–94 के बाद), देश मे रोजगार कार्यालयों में पंजीकृत बेरोजगारी का विवरण, कुल रोजगार और संगठित क्षेत्र में उपलब्ध रोजगार, बेराजगारी के प्रभाव, बेराजगारी के कारण, बेरोजगारी मिटाने के उपाय, रोजगार हेतु सरकार उपाय

अध्ययन 12 निर्धनता

निर्धनता, गरीबी रेखा का अभिप्राय, निर्धनता के कारण, निर्धनता उन्मूलन कार्यकम, निर्धनता निवारण कार्यकमों का मूल्यांकन, निर्धनता दूर करने हेतु सुझाव

अध्ययन 13 क्षेत्रीय असन्तुलन

क्षेत्रीय असन्तुलन का आशय, क्षेत्रीय असन्तुलन के सूचक, क्षेत्रीय असन्तुलन के कारण, क्षेत्रीय असन्तुलनों का प्रभाव, सरकार द्वारा संतुलित क्षेत्रीय विकास हेतु उठाए गए कदम, क्षेत्रीय असन्तुलन को दुर करने के उपाय अथवा भारत में, सन्तुलित क्षेत्रीय विकास हेतु सुझाव

अध्याय 14 सामाजिक अन्याय

सामाजिक, अन्याय का आशय, सामाजिक अन्याय समाप्त करने के प्रयास, आर्थिक विकास तथा समाजिक अन्यय, सामाजिक न्यायमुक्त विकास में कठिनाइयॉ, सामाजिक न्यायमुक्त आर्थिक विकास हेतु सुझाव

अध्याय 15 मुद्रा–स्फीति अथवा मुद्रा–प्रसार

मुद्रा प्रसार, का आशय, मुद्रा प्रसार की परिभाषाएँ, मुद्रा प्रसार के प्रकार, मुद्रा प्रसार की तीव्रता(गति) , मुद्रा प्रसार के कारण, मुद्रा प्रसार के प्रभाव, मुद्रा प्रसार

को रोकने के उपाय, मुद्रा.–स्फीति और आर्थिक विकास, मुद्रा–स्फीति के विरूध्द सरकारी नीति

अध्याय 16 समानान्तर अर्थव्यवस्था अथवा काला धन

समानान्तर अर्थव्यवस्था का आशय, कोल धन का आशय एवं प्रकति, भारत में काले धन का उद्‌भव तथा श्रोत, समानान्तर अर्थव्यवस्था की उत्पत्ति के कारण, समानान्तर अर्थव्यवस्था के दुष्प्रभाव, समानान्तर अर्थव्यवस्था को रोकने हेतु उठाए गए कदम, समानान्तर अर्थव्यवस्था की समस्या के सुधार के लिए सुझाव

अध्याय 17 औद्योगिक रूग्णता

औद्योगिक रूग्णता की परिभाषाएँ, औद्योगिक रूग्णता के करण, औद्योगिक रूग्णता के प्रतीक, औद्योगिक रूग्णता के परिणाम, औद्योगिक रूग्णता रोकेने हेतु उपाय, सरकार की नीति, औद्योगिक एवं वित्तीय पुर्सस्थापन बोर्ड, औद्योगिक एवं वित्तिीय पुनसंरचना बोर्ड के कार्य

खण्ड – III

अध्याय 18 सरकार की भूमिका

व्यवसाय में सरकार की भूमिका, सरकार की बदलती हुई भूमिका

अध्याय 19 मौद्रिक नीति

मौद्रिक नीति का आशय एवं परिभाषाएँ, मौद्रिक नीति के उद्‌देश्य, मौद्रिक नीति के प्रकार, मौद्रिक नीति का महत्व, उदारीकरण से पूर्व मौद्रिक नीति, आर्थिक सुधारों के पश्चात् मौद्रिक नीति

अध्याय 20 राजकोषीय नीति

राजकोषीय नीति का आशय एवं परिभाषाएँ, राजकोषीय नीति की विशेषताएँ, राजकोषीय नीति के उद्‌देश्य राजकोषीय नीति के संघटक, भारत में राजकोषीय नीति, भारतीय राजकोषीय नीति के प्रभाव, भारतीय राजकोषीय नीति की कमियॉ, भारतीय राजकोषीय नीति में सुधार हेतु सुझाव

अध्याय 21 औद्योगिक नीति

औद्योगिक नीति का आशयक, भारत की औद्योगिक नीति, औद्योगिक नीति 1991, औद्योगिक नीति 1991 के उद्देश्य, औद्योगिक नीति 1991 की बातें, औद्योगिक नीति 1991 के गुण, औद्योगिक नीति 1991 की कमियां

अभ्यास 22 औद्योगिक लाइसेन्सिंग

औद्योगिक नीति का आशय, भारत की औद्योगिक नीति, उद्योग विकास एवं नियमन अधिनियम 1951, लाइसेंस नीति, 1991 तथा उद्योग विकास एवं नियमन अधिनियम, नई औद्योगिक लाइसेंन्सिंग नीति, औद्योगिक लाइसेन्सिंग नीति 1991 की प्रमुख विशेषताएं, लाइसेंस प्रणाली में सुधार हेतु सुझाव

अभ्यास 23 निजीकरण

अध्ययन के उद्देश्य, निजीकरण, निजीकरण की विशेषताएं, निजीकरण के उद्देश्य, निजीकरण के लिये अपनायी जाने वाली तकनीकें/विधियां, निजीकरण के लाभ, निजीकरण के दोष, भारत में निजीकरण, भारत में निजीकरण को प्रेरित करने वाले कारक, उदारीकरण के उद्देश्य, उदारीकरण के उपाय या तरीके, वैश्वीकरण का आशय, वैश्वीकरण के अंग, वैश्वीकरण की विशेषताएं, भारत में वैश्वीकरण को प्रेरित करने वाले कारक, वैश्वीकरण का महत्व, वैश्वीकरण के दुष्प्रभाव, भारतीय अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण

अध्याय 24 अवमूल्यन

अवमूल्यन का अर्थ एवं परिभाषा, अवमूल्यन के कारण, अवमूल्यन के उद्देश्य, अवमूल्यन की असफलता के लिए आवश्यक दशाएं, अवमूल्यन प्रभाव

अध्याय 25 निर्यात–आयात नीति

निर्यात–आयात नीति का आशय, निर्यात–आयात का महत्व, निर्यात–आयात नीति के प्रकार, नवीन निर्यात–आयात नीति

अध्याय 26 विदेशी विनियोग का नियमन तथा विदेशी सहयोग

विदेशी विनियमय प्रबंधन अधिनियम 2000, फेरा व फेमा में अंतर, फेमा के प्रमुख प्रावधान, विदेशी निवेश के प्रकार, विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए सरकारी प्रयास, नई औद्योगिक नीति तथा विदेशी तकनीकी ठहराव, विदेशी

सहयोग के दोष, आर्थिक विकास में विदेशी पूंजी व सहयोग की भूमिका, भारत में विदेशी पूंजी की समस्याएं, सुझाव

अध्याय 27 पंचवर्षीय योजनाएं

दृष्टि तथा युक्ति, ग्यारहवी योजना के प्रमुख लक्ष्य, समष्टि आर्थिक रूपरेखा, ग्यारहवी पंचवर्षीय योजना की वित्तीय संरचना, ग्यारहवी पंचवर्षीय योजना में विभिन्न क्षेत्रों का सार्वजनिक क्षेत्र परिव्यय, रोजगार परिप्रेक्ष्य, खण्डीय नीतियां, बारहवी पंचवर्षीय योजना, बारहवी पंचवर्षीय योजना में संसाधनों का आबंटन, वित व्यवस्था, आधरिक संरचना निवेश, रणनीति, योजना की मुख्य बातें

अध्याय 28 अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक पर्यावरण, विश्व व्यापार की प्रवृत्तियां तथा विकासशील देशों की समस्याएं

अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक वातावरण आशय एवं परिदृश्य, अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक वातावरण के परिवर्तनशील आयाम, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक पर्यावरण तथा भारत, विश्व व्यापार प्रवृत्तियां, निर्यात व्यापार की संरचना, विश्व का आयात–व्यापार, विकासशील देशों की विदेशी व्यापार संबंधी समस्याएं

अध्याय 29 विदेशी व्यापार एवं आर्थिक संवृद्धि

विदेशी व्यापार का आशय एवं परिभाषाएं, विदेशी व्यापार की आवश्यकता एवं महत्व, विदेशी व्यापार की हानियां

अध्याय 30 अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक समूह

अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक समूह का आशय, यूरोपियन साझा बाजार, यूरोपियन साझा बाजार तथा भारत, यूरोपियन मुक्त व्यापार क्षेत्र, एशिया प्रशांत आर्थिक सहयोग, उत्तर अमेरिकी मुक्त व्यापार ठहराव, दक्षिण पूर्वी एशियाई राष्ट्र संघ, हिंद महासागर तट क्षेत्रीय सहयोग

अध्याय 31 व्यापार एवं प्रशुल्क विषयक सामानय ठहराव (गैट) तथा विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू. टी. ओ.)

गैट, गैट के उद्देश्य, गैट का सिद्धांत, गैट के विभिन्न दौर, गैट का उपलब्धियां, गैट की असफलताएं गैट तथा भारत, विश्व व्यापार संगठन, कार्य, उद्देश्य, गैट व

विश्व व्यापार संगठन में अंतर, संगठन एवं प्रबन्ध, विश्व व्यापार संगठन एवं भारतीय कृषि, बौद्धिक सम्पदा अधिकार सुरक्षा, विश्व व्यापार संगठन तथा भारत

अध्याय 32 विश्व बैंक

विश्व बैंक क्या है, विश्व बैक का उद्देश्य, विश्व बैंक का प्रबन्ध एवं संगठन, पूंजी, विश्व बैंक की सदस्यता, विश्व बेंक के कार्य, विश्व बैंक की कार्यप्रणाली, विश्व बैंक की सफलताएं या उपलब्धियां, असफलताएं, विश्व बैंक तथा भारत

अध्याय 33 अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष की स्थापना, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष के उद्देश्य, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के कार्य, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष का संगठन, प्रबंध एवं मताधिकार, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष की सदस्यता, पूंजी तथा अभ्यंश अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष का प्रचालन, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष मूल्यांकन, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष तथा विकासशील देश, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष तथा भारत

अध्याय 34 विदेशी प्रत्यक्ष निवेश

विदेशी प्रत्यक्ष निवेश क्या है ?, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश एवं भारत, भारत के विदेशी प्रत्यक्ष निवेश में कुछ प्रमुख देशों का भाग, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश को प्रोत्साहन देने के लिए उठाए गए कदम, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश का अन्तर्प्रवाह, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का उद्योगानुसार अन्तर्प्रवाह

अध्याय 35 प्रति व्यापार

प्रति व्यापार का आशय, प्रति व्यापार की तकनीकें, प्रति व्यापार तथा भारत